पश्चिम की तीर्थयात्रा

ऊ छङ·अन

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

पश्चिम की तीर्थयात्रा

ऊ छडःअन

खण्ड तीन

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

प्रथम संस्करण 2009

अनुवादक : जानकी बल्लभ
मनमोहन ठाकौर

हिन्दी सम्पादक : छन शिय्वे, ल्यू मिङचन
छ्येन युङमिङ, शन शिनह्वा

ISBN 978-7-119-04786-7
© विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ, चीन, 2009

प्रकाशक : विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह
24 पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ 100037, चीन
http://www.flp.com.cn

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

图书在版编目（C I P）数据

西游记：印地文 / （明）吴承恩著；（印）泰古尔，
（印）波拉普译. —北京：外文出版社，2009
ISBN 978-7-119-04786-7

I. 西… II.①吴…②泰…③波… III.章回小说－中国－
明代－印地语 IV.I242.4

中国版本图书馆 CIP 数据核字（2009）第 179490 号

策　　划：林福集、陈力行、王树英、陈学斌、刘明珍、陈士樾

出书执行：陈士樾
联络操办：陈力行
责任编辑：刘明珍
书稿核校：陈学斌、赵玉华、杨漪峰、唐远贵
电脑指导：吴　杉
封面设计：唐少文

终　　审：金鼎汉、陈宗荣、林福集、陈学斌、钱王驷、陈士樾、刘明珍

西游记

吴承恩 著

©2009 外文出版社
出 版 人：呼宝民
总 编 辑：李振国
出版发行：外文出版社
地址：中国北京西城区百万庄大街 24 号　　邮政编码：100037
网址：http://www.flp.com.cn
电话：(010) 68320579/68996067（总编室）
　　　(010) 68327750/68996164（版权部）
印　　制：三河市天功达印刷有限公司
经　　销：新华书店 / 外文书店
开　　本：850mm×1168mm　1/32　　　装　　别：平
版　　次：2009 年 10 月第 1 版　2009 年 10 月第 1 版第 1 次印刷
书　　号：ISBN 978-7-119-04786-7
定　　价：260.00 元

版权所有　侵权必究　如有印装问题本社负责调换

विषय-सूची

अध्याय-67
सुस्थिरता है ध्यान-प्रकृति में, थओलओ ग्राम सुरक्षित,
सकल प्रदूषण हुआ दूर, जब हुआ मार्ग परिशोधित। 1
अध्याय-68
पहुंचा फुरफुरिया प्रदेश में थाङ भिक्षु जब,
किया गहन इतिहास विवेचन;
बना चिकित्सक परहित प्रेरित तीर्थपथिक सुन। 18
अध्याय-69
रात्रि में औषधि बनाई, मनस्वी कपि ने अनोखी,
भोज के दौरान की चर्चा महीपति ने असुर की। 35
अध्याय-70
धूम, अनल, रेता बरसाया दुष्ट दैत्य ने रण में,
चुरा ले गया स्वर्ण-घण्टियां ऊखुङ चतुराई से। 52
अध्याय-71
नाम नकली धर किया कपिराज ने दानव दमन,
थामने को असुर का उत्पात प्रकटीं क्वानइन। 70
अध्याय-72
मकड़जाल कन्दरा बीच था,
सातों मनोविकारों ने उलझाया सचमुच मूलतत्व को;
और मलिनता-परिमार्जक चश्मे पर जाकर,
भूल गया शूकर अपने को। 89
अध्याय-73
बदला लेने मनोविकारों ने ढाई जब घोर तबाही,
खंडित किया हृदय-स्वामी ने दानवदेह-जनित प्रकाश को। 108
अध्याय-74
खोली कलई ली छाङकङ ने दानव के पापी स्वरूप की,
शक्ति दिखाई रूपान्तर की नवदीक्षित वानर ने अपनी। 128
अध्याय-75
मनस्वी कपि ने किया जब छिद्र नर-मादा कलश में;

此为试读，需要完整PDF请访问：www.ertongbook.com

पलायन कर गया दानवराज, मार्ग हुआ निरापद। 144

अध्याय-76

अन्तरात्मा का निलय में हो गया जब वास,
दानवों ने शस्त्र डाले छोड़कर सब आस;
मदद वनमां से हुई हासिल उन्हें जब,
सत्य पथ पर लौट आए दैत्यगण सब। 164

अध्याय-77

दनुज सैन्य ने मूल प्रकृति से दुर्व्यवहार किया जब,
गया बुद्ध चरणों में साधक नमस्कार करने तब। 182

अध्याय-78

भिक्षुदेश में की देवों ने गुप्त रूप से करुणा-यात्रा;
राजमहल में खुली दैत्य की कलई, हुई पंथ की चर्चा। 201

अध्याय-79

गए खोजने दनुज गुफा जब हुई भेंट दीर्घायु से वहां,
नन्हे बच्चों के प्राणों की रक्षा हुई अन्ततोगत्वा। 219

अध्याय-80

युवती को थी एक पुरुष साथी की तलब-तलाश,
चाल समझ दानव की कपि ने गुरु का किया बचाव। 235

अध्याय-81

पहचाना मठ में दानव को परम मनस्वी वानर ने,
जुटे खोज में गुरु की अपने श्याम चीड़-वन में तीनों। 253

अध्याय-82

रिझाया जब पुरुष को स्त्री ने एक मायावी,
तो की आदिदेवों ने रक्षा महामार्ग की। 273

अध्याय-83

पहचान लिया सिनाबार शोधक को मनस्वी कपि ने जब,
लौट गई सुन्दरी असली रूप में अपने। 292

अध्याय-84

बुद्ध शरण में भिक्षु अनश्वर को जब हुआ बोध मानस में,
धर्मराज को ज्ञान सत्य का हुआ सहज माध्यम से अपने। 309

अध्याय-85

वनमाता से हुई मनस्वी कपि को ईर्ष्या;
कुटिल दैत्य ने रचा एक षड्यंत्र,
निगलना चाहा उसने ध्यानयोग निष्णात भिक्षु को। 326

अध्याय-86
वनमाता ने शक्ति लगाकर दैत्य-दमन में की सहायता,
धातु-अधिप ने दानव का जादुई शक्ति से किया सफाया। 346
अध्याय-87
फङ्श्येन में जब देवलोक का हुआ घोर अपमान,
वर्षा रुकी, अवर्षण से तब हुआ प्रचुर नुकसान;
नेकी को प्रेरित करने में सफल हुआ जब वानर,
लगा बरसने रिमझिम पानी, भागा सूखा सत्वर। 364
अध्याय-88
ध्यानयोग के साधक पहुंचे जब य्वीह्वा में,
हुआ प्रदर्शन वहां तिलिस्मी दांव-पेंच का;
वनमाता, कपिराज मनस्वी दोनों ने ही,
जुटा लिए तब शिष्य वहां पर अपने-अपने। 382
अध्याय-89
कपिल सिंह प्रेतात्मा ने बड़े चाव से
किया व्यर्थ आयोजित पांचा भोज एक दिन,
आंचल में तेंदुआशीर्ष पर्वत के जाकर
धातु, काष्ठ, माटी ने हाहाकार मचाया। 399
अध्याय-90
प्रक्रिया से आदान-प्रदान की
हुए एकरूप सिंह और स्वामी,
मार्ग तस्करी, ध्यान-व्यवधान के बाद
हुआ शान्त नौगुना देवत्व। 413
अध्याय-91
चिनफिङ में भरपूर सराहा चन्द्रोत्सव कण्डीलों को,
आत्म-विवेचन किया भिक्षु ने अन्ध-तत्व कन्दरा जहां। 429
अध्याय-92
तीनों भिक्षु जुट गए हरित-ड्रैगन पर्वत पर भीषण रण में,
चार सितारों ने जा पकड़े दुर्दम गैंडा-दैत्य सहज ही। 449
अध्याय-93
हुई चर्चा दानवीर सुदत्त उद्यान में
पुराकाल एवं कार्य-कारण सम्बन्धों की,
हुआ मिलन भारत की राजसभा में
नृपति के साथ भिक्षुगण का। 467

अध्याय-94
किया चारों भिक्षुओं ने जब
संगीत की धुन पर शाही उद्यान में भोजन;
हुआ अंकुरित दानव-बाला के मन में निष्फल प्रेम,
जगी कामना उसके हृदय में परमसुख की। 483
अध्याय-95
बन गई बन्दी मादा जेड खरगोश जब,
हो गया मिलन असली-नकली का;
प्रकट हुआ नारी का असली रूप,
मिल गया उसका आत्मिक मूल। 503
अध्याय-96
किया गृहस्वामी खओ ने परमश्रेष्ठ भिक्षु का हार्दिक सत्कार,
ठुकरा दिया थाङ महाभिक्षु ने धन-दौलत मान-सम्मान। 521
अध्याय-97
हुआ दस्यु आक्रमण,
भिक्षुगण पर और समर्थकों पर उनके;
बुला लिया जीवात्मा को महर्षि ने फिर से,
बचा लिया मूल व्यक्ति को उसने। 538
अध्याय-98
कर लिया वश में वानर और घोड़े को जब,
त्याग दी उन्होंने कठोरता अपनी सब;
काम सभी पूरे हमारे हो जाते जब,
प्रकट सच्चाई अवश्य हो जाती तब। 558
अध्याय-99
हो जाते नहले नौ पूर्ण जब,
नाश सभी दैत्यों का होता है;
हो जाते त्रिगुण तीन पूर्ण जब,
मार्ग मूल ओर लौट जाता है। 578
अध्याय-100
लौट गए वापस जब पूरब में,
प्राप्त निर्वाण किया पांचों अमर्त्यों ने। 592

अध्याय–67

सुस्थिरता है ध्यान-प्रकृति में, थओलओ ग्राम सुरक्षित, सकल प्रदूषण हुआ दूर, जब हुआ मार्ग परिशोधित।

कथा में आगे बताया गया है कि सानचाङ और उसके तीनों शिष्यों ने किस प्रकार लघु पश्चिमी स्वर्ग को पीछे छोड़कर अपनी यात्रा खुशी-खुशी जारी रखी। उन्हें चलते-चलते एक महीना हो चुका था और अब वसन्त ऋतु उत्तरार्ध में प्रवेश कर चुकी थी। पुष्प पूरी तरह खिले हुए थे और वनों में हरियाली छाई हुई थी। कुछ समय तक हवा चलने और वर्षा होने के बाद फिर एक बार सांझ होने जा रही थी। "शिष्यवर," सानचाङ ने घोड़े की लगाम खींचते हुए कहा, "सांझ हो रही है। रात बिताने के लिए हम लोग कहां जाएंगे ?" "चिंता न करें, गुरुदेव," वानर ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "अगर हमें रात बिताने के लिए कोई भी जगह न मिली, तो भी हम अपने हुनर से कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे। शूकर से कहिए कि वह कुछ घास काट लाए और भिक्षु रेतात्मा से कहिए कि वह कुछ चीड़ की लकड़ी काट लाए। मैं कुछ बढ़ई का काम जानता हूं। हम यहां मार्ग के किनारे अपने लिए एक झोंपड़ी बना सकते हैं, जिसमें हम अगर चाहें तो सालभर तक टिक सकते हैं। जल्दी मचाने की क्या जरूरत है ?" "लेकिन भैया, यह जगह टिकने लायक कतई नहीं है," शूकर बोला, "पहाड़ पर बाघों, चीतों और भेड़ियों जैसे जंगली जानवर विचरण कर रहे हैं। पूरे क्षेत्र में पहाड़ी दानवों व पिशाचों का बोलबाला है। दिन में भी यात्रा करना कठिन है। मुझे तो यहां रात बिताने का साहस नहीं है।" "अरे मूर्ख," वानर ने कहा, "तुम दिन-ब-दिन भीरु बनते जा रहे हो। मैं सिर्फ डींग नहीं मार रहा। अपना दण्ड हाथ में उठाकर मैं नीचे गिरते आसमान को भी रोक सकता हूं।"

गुरु और शिष्यों के बीच का यह वार्तालाप अभी चल ही रहा था कि उन्हें कुछ दूरी पर एक पहाड़ी बस्ती दिखाई दी। "वाह !" वानर बोला, "रात काटने के लिए जगह मिल गई है।" "कहां ?" श्रद्धेय धर्माचार्य ने पूछा। "वहां पेड़ों के झुरमुट में एक मकान नहीं दीख रहा क्या ?" वानर ने उस ओर इशारा करते हुए कहा, "चलो पूछें, क्या हम लोग वहां रात बिता सकते हैं ? कल सुबह तड़के ही हम अपनी राह चल पड़ेंगे।" सानचाङ बेहद खुश हो गया। उसने अपने घोड़े को उस ओर बढ़ा दिया। खपचियों से बने फाटक के बाहर वह घोड़े से उतर गया। फाटक मजबूती से बन्द था। "खोलो, फाटक खोलो," उसने दस्तक देते हुए पुकारा। हाथ में छड़ी लिए एक बूढ़े व्यक्ति ने फाटक खोला। वह पांव में सरपत की पादुका, सिर में काली पगड़ी और बदन में सादा चोगा पहने था। "कौन पुकार रहा है ?" उसने पूछा। अपने दोनों हाथ छाती के सामने ले जाते हुए सानचाङ ने झुककर विनम्रता-

पूर्वक अभिवादन किया और बोला, "महोदय, मैं पूरब से आया एक भिक्षु हूं, जिसे पश्चिमी स्वर्ग से बौद्धग्रंथ लाने के लिए भेजा गया है। चूंकि आपके इस श्रेष्ठ स्थान पर आते-आते काफी सांझ हो गई है, इसलिए मैं रात बिताने के लिए आपके निवास पर आया हूं। आशा है आप मुझे कृतार्थ करेंगे।" "भिक्षुवर," बुजुर्ग ने कहा, "आप पश्चिम की यात्रा पर जाना चाहते हैं। पर आप वहां कभी नहीं पहुंच पाएंगे। यह लघु पश्चिमी स्वर्ग का क्षेत्र है और वृहद पश्चिमी स्वर्ग यहां से बहुत दूर है। पहले तो इसी स्थान से बाहर निकलना काफी कठिन है, बाकी यात्रा की कठिनाइयों को पार करना तो दूर रहा।" "यहां से बाहर निकलना कठिन क्यों है ?" सानचाङ ने पूछा। बुजुर्ग ने अपने हाथ से इशारा करते हुए उत्तर दिया, "हमारे गांव से कोई एक दर्जन कोस के फासले पर पश्चिम में एक अविच्छिन्न परसीमन गलियारा तथा एक पर्वत है, जो सात-पूर्णता पर्वत कहलाता है।" "उसका नाम सात-पूर्णता पर्वत क्यों पड़ा है ?" सानचाङ ने पूछा। "यह पर्वत एक छोर से दूसरे छोर तक 250 कोस लम्बा है," बुजुर्ग ने उत्तर दिया, "और इसमें परसीमन के पेड़ लगे हुए हैं। एक पुरानी कहावत के अनुसार परसीमन के पेड़ों में सात पूर्णताएं होती हैं : (1) वे उम्र को लम्बा करते हैं; (2) वे अत्यन्त छायादार होते हैं; (3) उन पर कोई पक्षी घोंसले नहीं बनाता; (4) वे कीटाणुरहित होते हैं; (5) उनकी पत्तियां पाला पड़ने के बाद बड़ी सुन्दर लगती हैं; (6) उनके फल बड़े मीठे होते हैं; (7) उनकी शाखें व पत्तियां खूब बड़ी व मोटी होती हैं। यही कारण है कि यह सात-पूर्णता पर्वत कहलाता है। इस विशाल पर्वतक्षेत्र में आबादी बहुत कम है और इसके भीतरी भाग में आज तक कोई नहीं घुस पाया। प्रतिवर्ष अत्यधिक पके हुए और सड़े हुए परसीमन के फल मार्ग में गिरे रहते हैं तथा समूचा चट्टानी गलियारा उनसे भर जाता है। वर्षा, ओस, बर्फ और पाले की मार उन पर पड़ती रहती है। गरमियों भर वे सड़ते रहते हैं और समूचा मार्ग उनकी सड़ांध से भर जाता है। आसपास रहने वाले लोग इसे अविच्छिन्न विष्ठा या अविच्छिन्न परसीमन गलियारे के नाम से पुकारते हैं। जब पछवा हवा चलती है, तब तो वहां से किसी नाबदान से भी ज्यादा बदबू आती है। चूंकि इस समय वसन्त ऋतु अपने पूरे यौवन पर है और दक्षिण-पूर्वी हवा तेज गति से चल रही है, इसलिए आपको यह दुर्गन्ध नहीं आ रही।" सानचाङ यह सब सुनकर बिलकुल हताश व हतबुद्धि हो गया।

लेकिन वानर से रहा नहीं गया। "अरे ओ मूर्ख बूढ़े," वह जोर से चिल्लाया, "हम लोग रात में अपने टिकने का ठिकाना खोजने यहां आए हैं, और तुम अपनी बातों से हमें डराने की कोशिश कर रहे हो। अगर तुम्हारा घर इतना छोटा है कि उसके अन्दर हमारे सोने के लिए जगह नहीं है, तो हम इस पेड़ के नीचे बैठकर रात बिता देंगे। इसलिए अपनी बकबक बन्द करो।" वानर का भयानक चेहरा देखकर बुजुर्ग ने भयभीत होकर अपना मुंह बन्द कर लिया। लेकिन कुछ ही क्षणों में साहस बटोरकर अपनी छड़ी की नोक वानर की ओर घुमाते हुए वह जोर से चिल्लाया, "लानत है तुम पर ओ हड्डीदार चेहरे, नुकीली भौंहों, चपटी नाक, धंसे गालों, बालयुक्त आंखों और रोगियों जैसी शक्ल वाले बन्दर !

दूसरों का मान-सम्मान करना तुम क्या जानो । इस तरह जबान चलाकर एक बुजुर्ग का अपमान करना कितनी गलत बात है !" "तुम्हारी दृष्टि उतनी पैनी नहीं है, बुजुर्गवार," वानर ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "तुम नहीं जानते कि यह रोगियों जैसी शक्ल वाला वानर कौन है । जैसा कि मुखाकृति-विज्ञान संहिता में कहा गया है, 'एक बेढंगा चेहरा ऐसी चट्टान की तरह होता है जिसमें बेहतरीन जेड पत्थर छिपे होते हैं ।' चेहरा देखकर लोगों का मूल्यांकन करना बिलकुल गलत है । मैं बदसूरत जरूर हूं, लेकिन एक-दो दांव भी जानता हूं ।" "तुम कहां से आए हो ?" बुजुर्ग ने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ? तुम्हारे पास कौन-सी शक्तियां हैं ?" वानर ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया :

"है घर मेरा पूर्वी विदेह महाद्वीप,
आचरण सुधारा फल-पुष्प पर्वत पर ;
आत्मा-कोट-हृदय पर्वत पितामह से,
पूर्ण प्रशिक्षण किया प्राप्त युद्ध-कौशल का ;
सागर का मन्थन करने में हूं समर्थ,
मातृ-ड्रैगनों का दमन कर सकता ;
कन्धे पर अपने पहाड़ हूं उठा सकता,
सूर्य को धकेलकर मैं ले जा सकता ;
दैत्य-दानवों को पकड़ने में हूं प्रवीण,
इस क्षेत्र में तो चैम्पियन मैं कहलाता ;
जब कभी सितारों का करता हूं स्थानान्तरण,
देवासुर दोनों हो जाते भयभीत हैं ;
ख्याति मेरी दूर-दूर तक है फैली हुई,
व्योम तस्करी में और धरती हिलाने में ;
मैं अनन्त रूपान्तरण क्षमतायुक्त कपि एक
भव्य प्रस्तर वानर हूं कहलाता ।"

यह सुनकर बुजुर्ग का क्रोध हर्ष में बदल गया । वह विनम्रतापूर्वक झुककर बोला, "आइए, कृपया मेरे गरीबखाने में पधारिए ।" घोड़े व सामान समेत चारों एक साथ अन्दर चले गए । फाटक के दोनों पहलुओं में उन्हें नुकीले कांटों के सिवाय और कुछ नहीं दिखाई दिया । अन्दर का फाटक ईंटों व पत्थरों की दीवार पर बना हुआ था । उस पर और भी अधिक कांटे लगे हुए थे । जब वे लोग उसे पार कर चुके, केवल तभी उन्हें खपरैलों की छत वाला तीन कमरे का मकान नजर आया । बुजुर्ग ने कुर्सियां खींचकर उन्हें बैठाया । फिर चाय और भोजन की व्यवस्था की गई । शीघ्र ही एक मेज पर खाना परोस दिया गया, जिसमें गेहूं का लासा, बीन-पनीर, शकरकन्द, मूली, शलजम, सरसों का साग, चावल तथा खट्टे मुश्कदाने का सूप शामिल था । गुरु और उसके शिष्यों ने भरपेट भोजन किया । खाना

此为试读,需要完整PDF请访问: www.ertongbook.com

खाने के बाद शूकर वानर को खींचकर एक तरफ ले गया और उसके कान में चुपके से फुसफुसाया, "भैया, यह बुड्ढा पहले तो हमें यहां ठहरने भी नहीं दे रहा था। और अब इसने हमें इतना बढ़िया खाना खिलाया है। आखिर क्यों ?" "क्या खाना सचमुच इतना बढ़िया था ?" वानर ने पूछा, "कल हम उससे दस प्रकार के फलों और दस प्रकार के व्यंजनों की मांग करेंगे।" "यह सब तुम्हारे ही बस का है," शूकर ने उत्तर दिया, "तुमने बड़ी-बड़ी डींगें मारकर उसे आज भोजन कराने के लिए अवश्य फुसला लिया। लेकिन कल तो हम अपनी यात्रा पर निकल पड़ेंगे। वह ये सब चीजें तुम्हें कैसे दे सकेगा ?" "बेसबरी न दिखाओ," वानर बोला, "मेरे पास एक उपाय है।"

शीघ्र ही सन्ध्याकाल बीतने लगा। बुजुर्ग एक चिराग उठा लाया। वानर ने झुककर पूछा, "आपका कुलनाम क्या है, महोदय ?" "ली," बुजुर्ग ने उत्तर दिया। "मैं सोचता हूं आपके गांव का नाम ली ग्राम है," वानर ने अपनी बात जारी रखी। "नहीं," बुजुर्ग ने कहा, "यह थओलओ ग्राम कहलाता है। यहां पाच सौ से अधिक परिवार रहते हैं। ज्यादातर लोगों के कुलनाम अलग हैं। सिर्फ मेरा ही कुलनाम ली है।" "मेहरबान ली महोदय," वानर बोला, "आपने आज हमें बढ़िया भोजन किस नेक इरादे से प्रेरित होकर कराया था ?" "अभी-अभी आप बता चुके हैं कि आप दुष्ट राक्षसों को पकड़ने में सिद्धहस्त हैं," बूढ़े आदमी ने कहा, "हमारे यहां भी एक दैत्य उत्पात मचा रहा है। हम चाहते हैं कि आप उसे पकड़ लें। बेशक, हम आपको भरपूर पुरस्कार देंगे।" वानर ने प्रणाम करते हुए कहा, "मुझे आपका आदेश मंजूर है।" "देखा आपने ?" शूकर ने अपने गुरुदेव से कहा, "यह एक नई मुसीबत मोल ले रहा है। ज्योंही इसे पता चला कि यहां किसी दैत्य को पकड़ना है, तो वह बुजुर्ग के प्रति अपने सगे दादा से भी ज्यादा आदर-सम्मान प्रदर्शित कर रहा है। यहां तक कि अभिवादन-प्रणाम भी कर रहा है।" "तुम नहीं समझ पाओगे मेरे भाई," वानर ने कहा, "मेरे प्रणाम से सौदा पक्का हो गया है। अब वह यह कार्य किसी और को नहीं सौंपेगा।"

जब सानचाङ ने यह सब सुना, तो वह बोला, "तुम भी अजीब वानर हो ! हर चीज को हथिया लेना चाहते हो। अगर उस प्रेतात्मा की शक्ति तुम्हारे मुकाबले कहीं अधिक निकली और तुम उसे न पकड़ पाए, तो हम भिक्षु झूठे साबित हो जाएंगे।" "नाराज न हों, गुरुदेव," वानर ने मुस्कराते हुए कहा, "मुझे कुछ और सवाल पूछने दीजिए।" "कौन से सवाल ?" बुजुर्ग ने पूछा। "यह सुन्दर गांव एक खुले मैदान पर बसा हुआ है और यहां बहुत से लोग रहते हैं," वानर बोला, "यह एक दूर-दराज के इलाके में बसा हुआ अलग-थलग गांव नहीं है। ऐसा कौन-सा प्रेतात्मा है जो आपके दरवाजे पर आने की जुर्रत कर सकता है ?" "मैं आपको सब कुछ सच-सच बता दूंगा," बुजुर्ग ने उत्तर दिया, "हम लोग यहां लम्बे समय से सुख-शान्ति के साथ रहते चले आ रहे थे। आज से कोई साढ़े तीन साल पहले एक दिन अचानक यहां हवा का एक तेज झोंका आया। उस समय हर आदमी या तो खलिहानों में गेहूं गाह रहा था अथवा खेतों में धान रोप रहा था। हमने समझा था यह केवल मौसम में तब्दीली का संकेत है। हम कभी सोच भी नहीं सकते थे कि यह हवा एक

प्रेतात्मा ने चलाई है और यह उन घोड़ों व मवेशियों को जिन्हें लोगों ने चरने के लिए बाहर छोड़ रखा था तथा सुअरों व भेड़ों को खा जाएगी। प्रेतात्मा हमारी मुर्गियों व बत्तखों को पूरा का पूरा निगल गया तथा जहां कहीं उसे कोई स्त्री या पुरुष दिखाई दिया उसे भी जिन्दा ही निगल गया। तब से वह हर साल यहां आता है और रक्तपात करने के बाद लौट जाता है। आदरणीय कपिवर, यदि आपके अन्दर सचमुच ऐसी तिलिस्मी शक्तियां मौजूद हैं जिनसे आप उस प्रेतात्मा को पकड़ सकें और हमारे इस इलाके को उसके उत्पात से मुक्त करा सकें, तो हम आपको निश्चित रूप से अत्यन्त उदारता व सम्मान के साथ यथोचित पुरस्कार देंगे।" "किन्तु उस राक्षस को पकड़ना कठिन है," वानर ने उत्तर दिया। "हां," शूकर बोला, "उसे पकड़ना अत्यन्त कठिन है। हम लोग तीर्थयात्री भिक्षु हैं और सिर्फ रात बिताने यहां आए हैं। कल हम आगे चले जाएंगे। हम किसी भी राक्षस को नहीं पकड़ सकते।" "इसका मतलब यह है कि आप लोगों ने मुझसे भोजन हासिल करने के लिए ही यह सब नाटक रचा था। जब हम पहली बार मिले, तो आपने बड़ी-बड़ी डींगें हांकी थीं। आपने कहा था, आप सितारों को स्थानांतरित कर सकते हैं और प्रेतात्माओं को पकड़ सकते हैं। लेकिन जब मैंने अपने यहां के प्रेतात्मा को पकड़ने का अनुरोध किया, तो आप कह रहे हैं कि उसे नहीं पकड़ा जा सकता।"

"बुजुर्गवार," वानर बोला, "प्रेतात्मा को पकड़ना बड़ा आसान है, बशर्ते कि आप लोग एक साथ मिलकर काम करें। आप लोग ऐसा नहीं करते, इसीलिए तो उसे पकड़ना कठिन है।" "आप निश्चित रूप से यह कैसे कह सकते हैं कि हम लोग एक साथ मिलकर काम नहीं करते ?" बुजुर्ग ने पूछा। "अगर यह राक्षस आपको तीन वर्ष से परेशान कर रहा है, तो ईश्वर ही जानता है कि वह अब तक कितने लोगों की जानें ले चुका होगा," वानर ने उत्तर दिया, "मैंने हिसाब लगाया है, अगर हर परिवार एक औंस चांदी दे, तो पांच सौ परिवार पांच सौ औंस चांदी जमा कर सकते हैं। इससे आप एक ऐसा पुरोहित खोज सकते हैं जो राक्षस को अपनी मंत्रशक्ति से भगा दे। आप लोग तीन वर्ष तक उसके अत्याचार क्यों सहते रहे ?" "धन जमा करने की बात करके," बुजुर्ग ने कहा, "आप हमें लज्जित कर रहे हैं। यहां हर परिवार चार-पांच औंस चांदी खर्च कर चुका है। पिछले से पिछले साल हम लोग इस राक्षस को पकड़ने के लिए पर्वत के दक्षिण से एक बौद्ध भिक्षु को यहां लाए थे, लेकिन वह असफल रहा।" "भिक्षु ने क्या उपाय किया था ?" वानर ने पूछा। बुजुर्ग ने उत्तर दिया :

"पहन भिक्षु का चोगा उसने,
सूत्रपाठ आरम्भ किया ;
पहले सूत्र मयूर और फिर,
सद्धर्म पुंडरीक सूत्र पढ़ा ;
धूप-दीप करके उसने,

घण्टी कर में अपने थामी ;
सूत्रपाठ के स्वर से उसके,
आशंकित जब दैत्य हुआ ;
मरुत-मेघ वाहन पर अपने
दुष्ट वहां अवतरित हुआ ;
भिक्षु और दैत्य दोनों में,
छिड़ा युद्ध तब अति भीषण ;
किया मुष्टि प्रहार एक ने,
हावी दुश्मन पर दूजा ;
केशविहीन मुण्ड भिक्षु का,
लाभजनक अति सिद्ध हुआ ;
तभी दैत्य वह विजयी होकर,
मेघयान पर जा पहुंचा ;
अंशुमान की किरणों में जब,
घाव भिक्षु का सूख गया ;
हमने उसके निकट पहुंचकर,
दिन में तब उसको देखा ;
दानव के भीषण प्रहार से,
केशविहीन मुण्ड उसका ;
पके हुए तरबूज सरीखा,
पलभर में था चटक गया ।"

"दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि उसे पराजय का मुंह देखना पड़ा," वानर ने हंसते हुए कहा। "उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ा," बुजुर्ग ने उत्तर दिया, "पराजय का मुंह तो हमें देखना पड़ा। हमें उसका कफन खरीदना पड़ा, उसकी अंत्येष्टि का खर्च देना पड़ा और उसके शिष्य को मुआवजा देना पड़ा। जो चांदी हमने जमा की, वह शिष्य को देने के लिए काफी नहीं थी। वह अब भी हम पर मुकदमा दायर करने की कोशिश कर रहा है। जो भुगतान हमने किया, उससे वह बिलकुल सन्तुष्ट नहीं है।"

"क्या आपने इस दानव को पकड़ने का काम किसी और को भी सौंपा था ?" वानर ने पूछा। "गत वर्ष हमने एक ताओपंथी साधु को इस कार्य के लिए आमंत्रित किया था," बुजुर्ग ने उत्तर दिया। "उसने कौन सा तरीका अपनाया ?" वानर ने पूछा। बुजुर्ग बोला, "ताओपंथी साधु

पहने था माथे पर अपने,
स्वर्ण-मुकुट एक अति सुन्दर,

तन पर वस्त्र तिलिस्मी शोभित;
ध्वनि जादुई छड़ी की मनहर,
तंत्र-मंत्र के बल पर उसने,
देववृन्द, सेनानी साधे;
दानव-दैत्य, पिशाच दमन में,
था निश्चय ही सबसे आगे;
गरज उठी तूफानी आंधी,
चहुंदिशि काली धुंध गई छा;
दैत्य और ताओपंथी दोनों,
थे समान भुजबल के योद्धा;
दिनभर देर सांझ होने तक,
हुआ युद्ध दोनों में भीषण;
मेघयान पर लौटा दानव,
दुश्मन का कर काम तमाम;
साफ हो गया आसमान जब,
पहुंच गए हम सब उस स्थान;
जहां साधु का शव था डूबा,
सरिता में पर्वत की शान्त;
जल से निकली उसकी काया,
भीगे कुक्कुट जैसी क्लान्त।"

"दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि उसे भी पराजय का मुंह देखना पड़ा," वानर ने मुस्कराते हुए कहा। "उसे तो अपनी जान से हाथ धोना पड़ा, लेकिन हमें भी बहुत सा धन गंवाना पड़ा, जो वास्तव में आवश्यक नहीं था," बुजुर्ग ने उत्तर दिया। "कोई बात नहीं," वानर बोला, "चिन्ता की कोई बात नहीं। जरा प्रतीक्षा करो और देखो मैं दानव को कैसे पकड़ता हूं।" "अगर आपके अन्दर सचमुच उसे पकड़ने की क्षमता है, तो मैं गांव के बड़े-बूढ़ों से अनुरोध करूंगा कि वे आपको यह समझौता-पत्र लिखकर दे दें : जब आप उसे परास्त कर दें, तो हम आपको मुंहमांगी चांदी देने का वचन दे देंगे, आपको एक भी पाई कम नहीं दी जाएगी। किन्तु अगर आप असफल रहे, तो हमसे पैसा वसूल करने की कोशिश न करें। हम ईश्वर की मरजी को मंजूर कर लेंगे।" "बुजुर्ग महोदय," वानर बोला, "उन लोगों ने आपका पैसा लूटकर आपको बहुत ज्यादा डरा दिया है। हम ऐसे लोग नहीं हैं। बड़े-बूढ़ों को बुला भेजिए।"

बुजुर्ग बेहद खुश हो गया। उसने अपने दास भेजकर अपने पड़ोसियों, अपने चचेरे भाइयों, अपनी पत्नी के परिवारजनों और अपने मित्रों को बुलवा भेजा। वे सात-आठ बड़े-

बूढ़े अजनबियों से मिलने वहां आ गए तथा थाङ भिक्षु का अभिवादन करने के बाद खुशी-खुशी दानव को पकड़ने के उपायों के बारे में विचार-विमर्श करने लगे। "यह कार्य आपके कौन से श्रेष्ठ शिष्य सम्पन्न करेंगे ?" उन्होंने पूछा। "मैं करूंगा," अपने दोनों हाथ छाती पर रखते हुए वानर बोला। "आप यह कार्य हरगिज सम्पन्न नहीं कर सकेंगे," बुजुर्ग ने आतंकित होकर कहा, "उस प्रेतात्मा की तिलिस्मी शक्तियां अपार हैं और उसका आकार भी अति विशाल है। परमादरणीय महोदय, आप इतने छोटे और दुबले-पतले हैं कि उसके दांतों के बीच की दरार से निकल जाएंगे।" "बुजुर्गवार," वानर ने मुस्कराते हुए कहा, "आपको लोगों की परख नहीं है। मैं छोटा भले ही दीखता हूं, पर अन्दर से बिलकुल पुख्ता हूं। जो कुछ दीखता हूं, उससे कहीं अधिक क्षमता रखता हूं।" जब बड़े-बूढ़ों ने यह सब सुना, तो उन्हें उसकी बात पर यकीन करना पड़ा। "परमादरणीय महोदय," वे बोले, "दानव को पकड़ने के लिए आप कितना बड़ा इनाम हासिल करना चाहेंगे ?" "आप लोग इनाम की बात क्यों कर रहे हैं ?" वानर ने कहा, "जैसा कि कहावत है, 'सोना चकाचौंध कर देता है, चांदी सफेद व मूर्खतापूर्ण होती है तथा तांबे के सिक्के दुर्गन्ध पैदा करते हैं।' हम लोग सदाचारी भिक्षु हैं, इसलिए धन निश्चित रूप से स्वीकार नहीं करेंगे।" "इसका अर्थ यह हुआ कि आप लोग उच्च श्रेणी के भिक्षु हैं और अपनी शपथ पर कायम रहते हैं," बड़े-बूढ़ों ने कहा, "किन्तु आप यदि धन न लेना चाहें, तो भी हम आपसे मुफ्त में काम नहीं कराना चाहेंगे। हम लोग कृषि से रोजी चलाते हैं। यदि आप इस दानव का दमन कर देंगे और हमारे क्षेत्र को उसके चंगुल से मुक्त करा देंगे, तो यहां का हर परिवार आपको एक-तिहाई एकड़ अच्छी कृषि-भूमि भेंट करेगा। इस तरह आपको कुल 150 एकड़ कृषि-भूमि प्राप्त हो जाएगी। इस भूमि पर आप और आपके गुरुदेव एक मठ बनाकर ईश्वर की आराधना कर सकेंगे। यह आपकी लम्बी यात्रा की तुलना में बेहतर होगा।" "यह तो उससे भी बदतर होगा," वानर ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "अगर हम भूमि प्राप्त कर लेंगे, तो हमें घोड़े पालने पड़ेंगे, श्रम करना पड़ेगा, लगान देना पड़ेगा तथा चारे की घास देनी पड़ेगी। हम सांझ होने पर अथवा पांचवें प्रहर के बाद भी सो नहीं सकेंगे। यह हमारे लिए मृत्यु के समान होगा।" "यदि आप हमसे कोई भी वस्तु नहीं लेंगे, तो हम अपना आभार कैसे प्रकट करेंगे ?" बड़े-बूढ़ों ने कहा। "हम धार्मिक व्यक्ति हैं," वानर बोला, "कुछ चाय-पानी की व्यवस्था करना और एकाध बार भोजन कराना हमारे प्रति आभार प्रकट करने के लिए पर्याप्त होगा।" "यह हमारे लिए बहुत आसान है," बड़े-बूढ़ों ने कहा, "किन्तु आप दानव को आखिर पकड़ेंगे कैसे ?" "ज्यों ही वह यहां आएगा, मैं उसे पकड़ लूंगा," वानर बोला। "लेकिन उसका आकार अत्यन्त विशाल है," बड़े-बूढ़ों ने कहा, "वह धरती से आस-मान तक फैला हुआ है। वह आंधी पर सवार होकर आता है और धुंध पर सवार होकर लौट जाता है। आप आखिर उसके करीब कैसे पहुंचेंगे ?" "जब उन प्रेतात्माओं से लोहा लेने का मौका आता है जो आंधी को बुला सकते हैं और बादलों पर सवार हो सकते हैं," वानर बोला, "तो मैं उन्हें महज बच्चा समझकर उनका सामना करता हूं। वे चाहे कितने ही

बड़े क्यों न हों, मेरे पास उन्हें परास्त करने के उपाय हैं।"

अभी वे लोग बातचीत ही कर रहे थे कि सहसा एक भीषण आंधी का गर्जन-तर्जन सुनाई पड़ा। नौ के नौ बड़े-बूढ़े डर के मारे थरथर कांपने लगे। "वानर महोदय, आपने भयानक संकट आमंत्रित किया है, लो, वह आ गया है," वे बोले, "आपने दानव की चर्चा की है, लो, वह आ गया है।" बुजुर्ग श्री ली ने दरवाजा खोला और अपने सम्बन्धियों व थाङ भिक्षु से कहा, "जल्दी से अन्दर आ जाओ, अन्दर आ जाओ। दानव आ गया है !" शूकर और भिक्षु रेतात्मा भी चौकन्ने हो गए। वे भी अन्दर जाना चाहते थे। पर वानर ने दोनों को हाथ पकड़कर रोक लिया और कहा, "लानत है तुम लोगों पर ! तुम भिक्षु हो और तुम्हें ज्यादा जागरूक होना चाहिए। जहां हो, वहीं खड़े रहो और भागने की कोशिश न करो। मेरे साथ आंगन में चलो। जरा देखें तो यह किस किस्म का प्रेतात्मा है।" "मगर भैया," शूकर बोला, "वे लोग इस सिलसिले में पहले से ही अनुभव प्राप्त कर चुके हैं। आंधी की आवाज इस बात का संकेत है कि दानव आ रहा है। वे सभी लोग छिप गए हैं। हम दानव के मित्र या सम्बन्धी तो हैं नहीं। आखिर हमारा उससे क्या वास्ता ? हम उसे भला क्यों देखना चाहेंगे ?" वानर के सामने किसी की एक न चली। वह इतना शक्तिशाली था कि वह उन्हें धकेलकर आंगन में ले गया और वहां खड़ा कर दिया। आंधी की आवाज लगातार तेज होती गई। वह एक भीषण आंधी थी, जिससे

उन्मूलित हुए वृक्ष, वन-उपवन पूर्ण ध्वस्त,
वन्य बाघ, भेड़िए सब, हो गए आतंकग्रस्त,
उद्वेलित उदधि-सरित, भयाक्रान्त देव-असुर,
धरती पर लोट गए, ह्वाशान के तीन शिखर,
धरा-नभ डोल उठे, चारों ही महाद्वीप,
द्वार ग्राम-ग्राम बन्द, देख विपदा समीप,
जान बचाकर अपनी, युवजन सब भाग गए,
मेघावलि बीच छिपे, स्वर्गंगा के तारे,
मन्द हुई दीप-ज्योति, व्याप्त तम जग में सारे।

शूकर डर के मारे थरथर कांपने लगा। वह जमीन पर लेट गया और उसने अपनी थूथनी से मिट्टी खोदकर अपना सिर उसके अन्दर छिपा लिया। लगता था जैसे उसे वहीं गाड़ दिया गया हो। भिक्षु रेतात्मा ने भी अपना चेहरा ढक लिया और आंखें मूंद लीं।

वानर को आंधी की आवाज सुनकर पता चल गया था कि दानव आ गया है। एक क्षण के बाद, जब आंधी निकल गई, तो आकाश के धुंधलके में उसे केवल दो चिराग नजर आए। "भैया," वानर बोला, "आंधी थम गई है। उठो और ऊपर देखो।" शूकर ने अपनी थूथनी बाहर निकाली, बदन की मिट्टी झाड़ी और ऊपर आसमान की ओर देखा, जहां उसे दो चिराग नजर आए। "कितनी विचित्र बात है," शूकर बोला, "कितनी विचित्र बात है।

此为试读，需要完整PDF请访问：www.ertongbook.com